International Journal of Applied Research 2016; 2(5): 251-253

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(5): 251-253
www.allresearchjournal.com
Received: 11-03-2016
Accepted: 12-04-2016

डॉ0 जया सिंह
सहायक प्राध्यापक,
मैट्स विष्वविद्यालय,
आरंग, गुल्लू (छ.ग.)।

Correspondence
डॉ0 जया सिंह
सहायक प्राध्यापक,
मैट्स विष्वविद्यालय,
आरंग, गुल्लू (छ.ग.)।

समकालीन कथा–लेखिका षिवानी के उपन्यासों में नारी–विमर्ष

डॉ0 जया सिंह

भूमिका

हिंदी साहित्य का समकालीन लेखन साहित्य की हर विधा में एक बड़ा परिवर्तन लेकर आया। अब रचना के केंद्र में नारी और दलित है। रचनाकार चाहे काव्य–लेखन कर रहा हो या गद्य–लेखन, किसी–न–किसी रूप में प्रमुखता से नारी ही उसकी रचना के केंद्र में है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन दिखाई देने लगे। स्वतंत्रता के पश्चात् उभरने वाली नई चेतना ने सभी प्रकार के लेखन को बढ़ावा दिया। शिक्षित नारियों के आगमन के साथ पुरुषों की धारा के रूप में लेखिकाएँ सर्जनात्मक कार्य में लग गई। इस प्रवाह की एक धारा लेखिका शिवानी हैं।

समकालीन उपन्यासकारों ने नारी–लेखन की अवधारणाओं में नारी–मुक्ति, नारी–संघर्ष पर बहुत से मत प्रकट किए और उन मत–मतांतर के क्रमिक विकास को अपने उपन्यासों में चित्रित भी किया है। समकालीन समाज में नारी–जागरण के फलस्वरूप उनकी चेतनाएँ धीरे–धीरे जीवन के हर क्षेत्र में अपनी दखल बढ़ाती गई।

इतिहास पर दृष्टि डालें तो अधिकारों से वंचित, शोषित एवं पीड़ित नारी की अंतरात्मा की चित्कार को रचनाकारों ने जिस षिद्दत से महसूस किया, वह अन्यत्र संभव नहीं था। यह भी सच्चाई है कि नारी के स्वर, सपने और आकांक्षाओं को जितनी गहराई से एक नारी समझ सकती है, पुरुष नहीं। यही कारण है कि सदियों की पीड़ाजन्य बोध को महिला–लेखिकाओं ने बड़ी गहराई से महसूस किया और उसे अपनी रचनाओं में लिपिबद्ध करके युग–युग की पीड़ा को आवाज़ दी।इनमें समकालीन लेखकों ने नारी–विमर्ष पर संघर्ष को अपने कथा–लेखन में गंभीरता से उभारा है। बंग महिला, राजेन्द्र घोष, उषा देवी भृगु, बसंत प्रभा, लीला अवस्थी, शकुन्तला शुक्ल, शांति जोशी, कृष्णा सोबती, कमला चौधरी, रजनी पनीकर, अन्नपूर्णा तागड़ी, इंदिरा नुपूर, इन्दू बाली, शषिप्रभा शास्त्री, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, मालती जोषी, जया जादवानी, मेहरून्निसा परवेज़, ममता कालिया, मृणाल पाण्डे, नीलिमा सिंह, बीना सक्सेना, अल्का सरावगी और शिवानी..... आदि कई महिला–रचनाकारों न न केवल लेखन के द्वारा आज की नारीगत विसंगतियों को व्यक्त किया, नारी के टूटन, घुटन और अंतःसंघर्ष को भी जन्म दिया। इन्होंने महिला–संघर्ष को एक नया आयाम दिया और साथ ही अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए पुरुष प्रधान समाज में भटकती नारी को एक नई राह दिखाई है। समाज में चतुर्दिक व्याप्त विषमताएँ और नारी–विसंगतियाँ जब चाहे–अनचाहे किसी नारी के संवेदनषील कलाकार मन तक पहुँचकर उसे आंदोलित करती है, तो वह उन्हें वाणी देने के लिए बाध्य हो जाती है। समकालीन महिला–उपन्यासकारों ने अपनी रचना–सृष्टियों में संवेदना के नाना बिंदुओं को उकेरा है। नाना बिम्बों को समूर्त किया है और चिंतन की नाना भाव–भूमियों का उद्घाटन किया है।

उषा देवी मित्रा के उपन्यास को देखें, तो उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना की वाणी मिलती है। वे नारी–जीवन से संबंधित कुछ विषेश प्रकार के चित्रों को ही विस्तारित रूप देती हैं। उनकी संपूर्ण लेखन–शैली के केंद्र में नारी के अंतर्मन की कोमलता और प्रेम की टीस का यथार्थवादी चित्रण मिलता है।

'रजनी पनीकर' ने अपने उपन्यासों में यह स्थापित किया है कि नारी अन्याय सहने के लिए नहीं है, वह जरूरत पड़ने पर तलाक या पुनर्विवाह करके अपना हक प्राप्त कर सकती है।

'बसंत प्रभा' ने सामाजिक विषमता और पारिवारिक उलझनों को वाणी दी है।

'लीला अवस्थी' ने नारी–वर्ग की यथार्थ जीवनचर्या को निकट से देखा या स्वयं अनुभव किया है।

'इन्दु बाली' ने अपने उपन्यास में नारी की आंतरिक अनुभूतियों के प्रकाशन के साथ नारी–मन की पीड़ा का सजीव चित्रण किया है।

'शांति जोशी' की रचना में नारी की पीड़ा को व्यापक आकार मिला है।

'कृष्णा सोबती' के उपन्यासों में लोक–जीवन एवं उसके सांस्कृतिक परिवेश की अतल गहराइयों तक उतरने की न केवल सूक्ष्म कला–दृष्टि है, बल्कि नारी के अंतरंग को पहचानने की कला में वे निष्णात् हैं।

इस संदर्भ में फ्रांसीसी लेखिका सीमोन द बोउवार लिखती हैं– ''स्त्री अपना चुनाव अपने स्वभाव के अनुकूल नहीं करती, बल्कि पुरुष द्वारा परिभाषित और प्रदत्त जीवन को स्वीकारती हैं।'' इतना ही नहीं औरत को औरत होना सीखाया जाता है। औरत बनी रहने के लिए अनुकूल किया जाता है।

'दिनेष नंदिनी डालमिया' के उपन्यास में लेखिका ने अपने आँसुओं की स्याही और अनुभूति की कलम से कागज़ के पृष्ठों को उतारा है। इनके उपन्यासों की एक–एक घटना, एक–एक अनुभूति सत्य से घुली–मिली हैं। नारी के अंर्तजगत का मार्मिक उद्धास और विचारों के स्तर पर जूझती हुई नई–पुरानी पीढ़ी का संघर्ष भी इसमें मुखरित हुआ है।

'मालती परूलकर' ने लीक से हटकर समकालीन भ्रष्ट राजनीति, छुआछूत और नारी–शोषण पर केंद्रित होकर लिखा है।

'चित्रा मुद्गल' की रचनाओं में जीवन के कटु अनुभव, उनका यथार्थ एवं त्रासद स्थिति के बीच नारी की अस्मिता, स्वावलंबन और स्वाभिमान की तीक्ष्णता मुखरित हुई है।

'ममता कालिया' ने नारी–मनोविज्ञान को यथार्थ के धरातल पर उतारा है। पारिवारिक जीवन में नारी की निराषाओं, कुंठाओं, अंतर्विरोधों, असंगतियों को उकेरने का अनूठा कार्य किया है।

'मालती जोशी' सूक्ष्म, संवेदनषील दृष्टि, स्वानुभूत जीवन की छाप, रूढ़ि विरोधी मानसिकता और नवीन विचारों का समर्थन, ये सभी इनकी रचनाओं में समावेषित हैं। इनकी रचनाओं में पारिवारिक, सामाजिक विसंगतियों से जूझती नारी का चित्र खींचा दिखाई देता है।

'मृणाल पाण्डे' की रचनाओं में भारतीय नारी से जुड़े ज्वलंत मुद्दों पर दृष्टिपात किया है।

ठस तरह इन समकालीन उपन्यासकारों द्वारा अपने लेखन में चित्रित नारी–चेतना के विविध सोपान के अंतर्द्वंद्व और सामंजस्य उकेरे गए हैं।

इसी संदर्भ में महिला उपन्यासकारों में एक नाम है षिवानी का, जिन्होंने यथार्थ जीवन के संदर्भ में नारी–विमर्ष को एक खास उड़ान और गढ़न दी। उन्होंने अपनी सभी रचनाओं में नारी–विमर्ष की उन सभी बातों और भावनाओं को दर्ज़ किया है, जिस गहराई तक सामान्य सोच पहुँच भी नहीं सकती।

षिवानी के उपन्यास में आत्मपीड़ा, समर्पण, हताषा, पराजय जैसी मुद्राओं का पुट नहीं मिलता वरन् इसके विपरीत उनके नारी–पात्र. बनी–बनाई कसौटी को तोड़ने या उन पर कसने के तनाव भरे द्वंद्व से मुक्त समाज में अपनी पुख्ता अस्मिता बनाने के लिए विषे"ा रूप से पहचानी जाती हैं। 'ाायद यही कारण है कि उनके नारी–पात्र अक्सर चुनौतियों और जीवन–संघ"ार्ों को पार करते पाठकों के हृदय की प्रेरणा बन जाया करती हैं। उनके सभी नारी–पात्रों ने अपने लिए सम्मानपूर्वक जीवन जीने का रास्ता तलाष किया है। यही उनके उपन्यास की 'ाक्ति है और आज की सदी की नारी का विमर्ष भी।

षिवानी ने अपने आत्मवृत्त संस्मरण में लिखा है कि नारी का विविध रूप है। वे कहती हैं कि नारी बनाकर विधाता ने नारी के अनेक रूपों को देखने–परखने का प्रचुर अवसर दिया है। उदाहरण– ''उसकी महानता, उसकी क्षुद्रता देख कभी–कभी दंग रह गई हूँ, क्या नारी ऐसी क्षुद्रता पर उतर सकती है, क्या नारी का अहंकार उतना ही प्रचंड होता है, जितना उसका दिया आघात ?'' इसे षिवानी स्वीकारती हैं कि नारी महान भी है, क्षुद्र भी। वह अपने संघ"ार्ा के षिखर पर बैठती है, तो अपनी दुर्बलताओं से अपना विनाष भी करती है।

'कालिंदी' उपन्यास में षिवानी ने अपने मूल कथ्य में नारी–मुक्ति को स्थान दिया है कि पढ़ी–लिखी नारी किसी हालत में पुरुष की भोग्या नहीं हो सकती, वह दृढ़तापूर्वक हर अत्याचार के विरुद्ध खड़ी होती है, तो वह विद्रोह करती है। एक दृष्टांत– ''आपका बेटा हमें नहीं खरीदना है, जाइए और जहाँ अपने पुत्र का मुहमाँगा दाम मिले, वहीं बेच आइए.....। आप सबसे मैं मामा की ओर से क्षमा माँगती हूँ, यह सस्ती नौटंकी देखने में आपको समय को हमने व्यर्थ न"ट किया। पर यकीन कीजिए कि मुझे इस लेन–देन की शर्त के बारे में जरा भी पता होता, तो मैं यह घड़ी कभी आने न देती।'' कालिंदी ने अपने इस आक्रोष के माध्यम से पूरी स्त्री–जाति को सम्मान प्रदान किया है और पुरुष को कटघरे में खड़ा किया है तथा सषक्त नारी होने का परिचय दिया है।

'विवर्त' उपन्यास में ललिता का पति पहले ही एक पत्नी के रहते हुए दूसरी शादी ललिता से करता है। पति के इस विश्वासघात से वह टूट जाती है और अपने आत्मसम्मान को बेचकर पति के टुकड़ों पर किसी भी हालत में नहीं पलना चाहती। एक उदाहरण– ''हमारे यहाँ जब पति की मृत्यु होती है तो विवाह का चिह्न यह मंगलसूत्र उसकी छाती पर धर दिया जाता है। वही कर रही हूँ, तुम तो हर शनिवार को लंदन ब्रिज जाते हो, तो क्या उसे यह लौटा दूँ, पता दे सकते हो? नहीं, अर्थात् उसे नहीं लौटाना है, वह है कहाँ जो तुम उसे लौटाओगे। मेरे लिए तो वह मर चुका है, इसे तुम ही नदी में बहा देना।'' इसमें ललिता को समाज में संघर्षरत दिखाते हुए षिवानी ने नारी–चेतना जागरण दिखाने के साथ संकेत किया है कि आज नारी पुरुष अनुगामिनी नहीं, समानता की अधिकारिणी भी है।

'उपप्रेती' उपन्यास में षिवानी ने दो प्रकार के नारी–चरित्र को दर्षाया है, एक अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलती है, तो दूसरी सौभाग्य को दुर्भाग्य में। रमा रंग–रूप में साधारण थी, विधाता ने उसे इंजीनियर पति दिया था, परंतु घटनाओं के जाल में उसकी ज़िंदगी उलझ जाती है और पति रहते हुए भी विधवा बनकर जीवन व्यतीत करना पड़ता है। उसका पति अपने छोटे भाई की विधवा के साथ विवाह करके अंजान क्षेत्र में रहकर अपना जीवन व्यतीत करती है।

'पूतोंवाली' एक स्त्री की विडंबना भरी जीवन–गाथा है, जो पाँच पुत्रों की माता होते हुए भी निपूति रही। यही वजह है कि शिवसागर (उसका पति) अंत में कहता है– मेरा कोई बेटा नहीं है, निपूति ही रही, उसे निपूति ही जाने दो।

'रथ्या' उपन्यास में विमलानंद वास्तव में भोगी चरित्र का व्यक्ति है, जो अपनी पत्नी के रहते हुए भी बसंती को रखैल के रूप में रखना चाहता है। सुदूर इतिहास पर दृष्टि डालें तो ऐसे बहुत से पुरुष–पात्र मिल जाएँगे, जां विमलानंद की तरह स्त्री का भोग तो करना चाहते हैं, लेकिन स्त्री के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किसी भी हालत में नहीं करना चाहते। विमलानंद बसंती को प्रस्ताव देते हुए कहते हैं– ''तू उसे नहीं जानती, मैं उससे कहूँगा मै। बसंती के बिना जी नहीं सकता। सुरसती तू इसे अपनी सौत मानकर नहीं छोटी बहन मानकर स्वीकार कर तो उसे कभी आपत्ति नहीं होगी। हमारे पहाड़ में कितने ही बड़े–बड़े आदमियों की दो पत्नियाँ हैं।''

'सुरंगमा' मानसिक रूप से दृढ़ चरित्र वाली है। वह मानती है कि– ''मीरा मुझे अपने पर विष्वास है, पुरुष कितना ही कुटिल, कामी क्यों न हो, जब तक नारी न चाहती हो, तब तक तो कोई उसका

सर्वनाश नहीं कर सकता।''

अतः उपर्युक्त उद्धरणों से यह सिद्ध होता है कि षिवानी के उपन्यासों में नारी–संघर्ष के अनेकानेक रूप हैं। समकालीन समाज में नारी–विमर्ष का प्रभाव उनके उपन्यास पर भी हैं। उनके पात्रों में जीवन–संघर्ष की सच्चाई देखी जा सकती है।

अतः इस शोध–पत्र में मैंने समकालीन उपन्यासकारों के उपन्यासों में आए जीवन–मूल्य, संघषशीलता, जागरूक नारी की जिजीविषा आदि विषय पर प्रकाष डालने का प्रयास किया है एवं विशेष रूप से शिवानी ने अपने सभी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों को नारी–विमश्र के मूल्यांकन हेतु किस तरह उभारकर सामने लाया है, इसे विश्लेषित करने का एक सूक्ष्म प्रयास किया है। नारी–जीवन के संघर्ष की गाथा को जीवन के विविध संग्राम में दिखाना ही उनके कथ्य–संसार का मूल है। शिवानी के समकालीन उपन्यासकारों के नारी–विमर्श और शिवानी के उपन्यासों में नारी–विमर्श में कोई मूलभूत अंतर नहीं है। अंतर है तो केवल उनकी रचनात्मकता का, जो नारी–विमर्श का एक नया रूप दिखा जाती है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. चतुर्वेदी, जगदीष्वर एवं सिंह, सुधा. (संपा.). स्त्री–अस्मिता साहित्य और विचारधारा.
2. पांडे, मृणाल. क्या लेखिका का अनुभव जगत सीमित होता है. सारिका, नवंबर 1983, पृ. 20.
3. सिंह, संतबख‘ा. नई कहानी. कथ्य और षिल्प.।